Dr Keerti Kumari,
Ass't Prof & Guest Teacher,
Deptt of Psychology,
S.R.A.P. College, Barachakia-
Motihari - East Champaran, Bihar
(A Constituent Unit of B.R.A. Bihar University, MFP)

Subject — Psychology - Educational -
Topic — Introspective Method.
Period — 3rd (B.A. Part II)
Day — Friday
Date — 03/02/2023
Contact No — 9801666117 / 8540943704

(iii) अन्तर्निरीक्षण विधि के दोष— इसके विपक्ष में कभी-कभी यह तर्क दिया जाता है कि इसमें एक ही व्यक्ति को अनुभवकर्ता और निरीक्षक - दोनों का ही कार्य करना पड़ता है और यह कार्य परस्पर एक दूसरे का विरोधी है। अतः एक ही व्यक्ति के अनुभवकर्ता और निरीक्षक - दोनों ही भाग लेने में तार्किक दोष हो जाता है।

(iv) इस विधि की प्रधान आलोचना यह है कि इसका प्रयोग सभी तरह के प्राणियों पर सम्भव नहीं है। बच्चे या पशु इस विधि का प्रयोग नहीं कर सकते। अतः इसका उपयोग अन्य विधियों की तुलना में अत्यन्त सीमित है। वास्तव में अन्तःनिरीक्षण का प्रयुक्त प्रयोग नहीं हो सकता है। यद्यपि इस विधि के उपयोग का क्षेत्र सीमित है, इसकी सहायता से अनेक मनोवैज्ञानिक समस्याओं का अध्ययन हुआ है। वास्तव में अन्तर्निरीक्षण विधि मनोविज्ञान की एक उपयोगी विधि है। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

2 निरीक्षण विधि — Observation Method:— निरीक्षण विधि को प्रेक्षण विधि भी कहते हैं। बाह्य निरीक्षण विधि के द्वारा स्वाभाविक परिस्थिति में होने वाले व्यवहारों का अध्ययन किया जाता है। बाह्य निरीक्षण विधि को मनोविज्ञान में प्रमुख स्थान देने का श्रेय

व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिकों ने है। निरीक्षण की प्रक्रिया में

1. ध्यान - Attention-
2. संवेदना - Sensation-
3. प्रत्यक्षीकरण - Perception
4. संकल्पना - Conception

एक सफल निरीक्षणकर्ता में उपर्युक्त चारों का होना आवश्यक है। प्रभावी निरीक्षण के लिए ध्यान का होना अति आवश्यक है। ध्यान से सतर्कता की एकाग्रता होती है। संवेदना से तात्पर्य आन्तरिक एवं बाह्य परिवेश का व्यक्ति की इन्द्रियों से होने वाला ज्ञान है। प्रत्यक्षीकरण में संवेदना को अर्थ या बोध प्रदान किया जाता है। किन्तु संकल्पना की सहायता से प्रत्यक्षीकरण अधिक सरल होजाता है।

निरीक्षण के प्रकार :- निम्नलिखित प्रकार के होते हैं।

1. औपचारिक निरीक्षण :- इस विधि में नियंत्रित परिस्थितियों में व्यवहार का निरीक्षण किया जाता है।
2. अनौपचारिक निरीक्षण :- इसके अन्तर्गत बिना किसी पूर्व निश्चित योजना के व्यवहारों का निरीक्षण किया जाता है।
3. आकस्मिक निरीक्षण :- Incidental Observation :- इस प्रकार में निरीक्षणकर्ता आकस्मिक रूप से ही व्यवहार का निरीक्षण करता है। जब बालक के व्यवहार का निरीक्षण बिना उसकी जानकारी के किया जाता है तब यह निरीक्षण आकस्मिक निरीक्षण कहलाता है।
4. व्यवस्थित निरीक्षण :- Systematic Observation :- इसके अन्तर्गत निर्धारित योजना के अनुसार व्यवहार का निरीक्षण किया जाता है। इस विधि को अधिक विश्वसनीय, सफल तथा प्रभावी बनाने के लिए अनेक प्रकार के साधनों को एकत्रित किया जाता है और उसके बाद इस विधि का प्रयोग किया जाता है।